MUTHA - II (2008 Course) : WINTER - 2016

Subject : Money & Financial Systems

Day : Wednesday
Date : 05/10/2016

S.D.E. 32049

Time : 11.00 AM TO 02.00 PM
Max Marks : 80 Total Pages : 3

N.B:

1) All questions are **COMPULSORY.**
2) Figures to the right indicate **FULL** marks.
3) Both sections to be written in the **SAME** answer book.

SECTION-I

Q.1 Attempt **ANY TWO** of the following questions. **(16)**

a) State the different concepts of national income.
b) State the methods of national income accounting.
c) Write the functions of money.
d) Explain the principle of effective demand.

Q.2 Write short notes on (**ANY FOUR**): **(16)**

a) GNP
b) Personal Income
c) Quantity Theory of Money
d) Price Index
e) Say's Law of Market
f) Consumption Function

SECTION-II

Q.3 Attempt **ANY TWO** of the following questions. **(16)**

a) Explain the nature and characteristics of trade cycles.
b) Explain the scope of public finance
c) State the causes of growth in public expenditure.
d) Explain the Solow's New Classical Growth Model.

Q.4 Attempt **ANY TWO** of the following questions. **(16)**

a) State the Keyne's view on the trade cycle.
b) Explain the principle of maximum social advantage.
c) State the effect of public expenditure.
d) Explain the Harrod and Domer Model of Economic Growth

Q.5 Write short notes on (**ANY FOUR**): **(16)**

a) Control of Trade Cycles
b) Direct and Indirect Taxes
c) Role of Public Debt in UDCs
d) Deficit Financing
e) Classical Growth Model
f) Economic Growth and Technical Progress.

* * * * *

मराठी रुपांतर

सूचना:

१) सर्व प्रश्न सोडविणे **आवश्यक** आहे.
२) उजवीकडील अंक **गुणांचा निर्देश** करतात.
३) दोन्ही विभाग **एकाच** उत्तरपत्रिकेत लिहावेत.

विभाग –१

प्र.१ खालीलपैकी **कोणत्याही दोन** प्रश्नांची उत्तरे लिहा. (१६)

अ) राष्ट्रीय उत्पन्नाच्या विविध संकल्पना स्पष्ट करा.
ब) राष्ट्रीय उत्पन्न लेखांकन पध्दती सांगा.
क) पैशाची कार्ये लिहा.
ड) प्रभावी मागणीचे तत्त्व स्पष्ट करा.

प्र.२ टीपा लिहा. **(कोणत्याही चार)** (१६)

अ) स्थुल राष्ट्रीय उत्पादन
ब) वैयक्तिक उत्पन्न
क) पैशाचा चलन संख्यामान सिध्दांत
ड) किंमत निर्देशांक
इ) 'से' चा बाजार नियम
फ) उपभोग फलन

विभाग –२

प्र.३ खालीलपैकी **कोणत्याही दोन** प्रश्नांची उत्तरे लिहा. (१६)

अ) व्यापारचक्राचे स्वरुप व वैशिष्ट्ये स्पष्ट करा.
ब) सार्वजनिक आयव्ययाची व्याप्ती स्पष्ट करा.
क) सार्वजनिक खर्चाच्या वाढीची कारणे सांगा.
ड) सोलोचे नवसनातनवादी वृध्दि प्रतिमान स्पष्ट करा.

प्र.४ खालीलपैकी **कोणत्याही दोन** प्रश्नांची उत्तरे लिहा. (१६)

अ) व्यापारचक्राविषयी केन्सचे विचार सांगा.
ब) महत्तम सामाजिक लाभाचे तत्त्व स्पष्ट करा.
क) सार्वजनिक खर्चाचे परीणाम सांगा.
ड) आर्थिक वृध्दिचे हेरॉड–डोमर प्रतिमान स्पष्ट करा.

प्र.५ टीपा लिहा. **(कोणत्याही चार)** (१६)

अ) व्यापारचक्राचे नियंत्रण
ब) प्रत्यक्ष आणि अप्रत्यक्ष कर
क) अल्पविकसित देशांच्या विकासातील सार्वजनिक कर्जाची भूमिका
ड) तुटीचा अर्थभरणा
इ) वृध्दिचे सनातनवादी प्रतिमान
फ) आर्थिक विकास आणि तांत्रिक प्रगती

* * * *

हिंदी रुपांतर

सूचनाएं:

१) सभी प्रश्न **अनिवार्य** है ।
२) दाहिने दिए हुए अंक **गुणोंका निर्देश** करते है ।
३) दोनों विभाग **एकही** उत्तरपत्रिका में लिखिए ।

विभाग –१

प्र.१ निम्नंलिखित में से **किन्ही दो के** उत्तर लिखिए । (१६)
अ) राष्ट्रीय आय के विभिन्न अवधारणाएं स्पष्ट कीजिए ।
ब) राष्ट्रीय आय लेखांकन की पद्धतीयां स्पष्ट कीजिए ।
क) मुद्रा के कार्य लिखिए ।
ड) प्रभावी मांग तत्त्व को स्पष्ट कीजिए ।

प्र.२ टिप्पणी लिखिए । **(कोई भी चार)** (१६)
अ) कुल राष्ट्रीय उत्पाद
ब) निजी आय
क) मुद्रा का चलनसंख्यामान सिध्दांत
ड) किंमत सूचकांक
इ) से का बाजार नियम
फ) उपभोग फलन

विभाग –२

प्र.३ निम्नंलिखित में से **किन्ही दो के** उत्तर लिखिए । (१६)
अ) व्यापार चक्र की प्रकृति तथा विशेषताएं स्पष्ट कीजिए ।
ब) राजकोषीय वित्त की व्यापकता स्पष्ट कीजिए ।
क) बढते सार्वजनिक व्यय के कारकों को स्पष्ट कीजिए ।
ड) सोलो के नवसनातनवादी संवृध्दि प्रतिमान को स्पष्ट कीजिए ।

प्र.४ निम्नंलिखित में से **किन्ही दो के** उत्तर लिखिए । (१६)
अ) व्यापार चक्रों के संदर्भ मे केन्स के दृष्टिकोन को स्पष्ट कीजिए ।
ब) महत्तम सामाजिक लाभ को स्पष्ट कीजिए ।
क) सार्वजनिक आय के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए ।
ड) हैरड–डोमर के संवृध्दि प्रतिमान को स्पष्ट कीजिए ।

प्र.५ टिप्पणी लिखिए । **(कोई भी चार)** (१६)
अ) व्यापारचक्र का नियंत्रण
ब) प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर
क) अल्पविकसित देशों के विकास में सार्वजनिक ऋण की भूमिका
ड) घाटे का वित्त
इ) पारम्पारिक संवृध्दि प्रतिमान
फ) आर्थिक विकास तथा तकनिकी प्रगती

* * * *